

एकांत

भूमिका दत्ता

जब मैं थी एकांत में;
एक सन्नाटा गूंजता था;
यह क्या था ?
मुझे ये पता न था;
महसूस करती थी उसे मैं पल-पल;
पर बदल सा जाता था वो हर पल;
यह क्या सुर थे जो छेड़ देते थे
मेरे तारों को जो थे मन में मेरे;
पर क्या मैं उन्हें सुन पाई थी ?



भूमिका दत्ता दयाल सिंह कॉलेज में बीएससी जीव विज्ञान (द्वितीय वर्ष) की छात्रा हैं।

What is Poetry?

Sanjhee Gianchandani —————

As I put pen to paper in order to write a poem A tiny voice asks me if I am poet enough. What is it that one calls a poem? The Wordsworthian spontaneous eloquence Or the Yeatsian guarrel with oneself? Keats calls it truth: Mill strives to define it still The metered verse or the decrying emotion Fail to reflect its essence Its superiority to its novelistic counterpart Lies in its very being The way it strikes a chord, rings a bell Words are few but have a lot to tell Feelings familiar yet anew The soul they seem to renew The cosmic drive that is shared by all Coupled by the solace in solitude Reading a good poem elevates the spirit And the process of writing it is as fulfilling Yet I wonder at my own poetic-ness With stories bubbling inside my head To vomit them after embellishment defeats the purpose Long rumination, meditation and cogitation Aid the process of creating a poem about poems For the writer-race to be able to relate.



Sanjhee Gianchandani is a student of M.A (English) final Year IV Semester at Lady Shri Ram College For Women.

Broken Tongue

Neelkanth Pan ————

My tongue was broken Long before I knew I had one.

Speaking Odia, listening Ho,
Playing with Adivasi lads,
Sitting with Urdu boys and girls,
Laughing in Hindi,
And reading English.

The semi-permeable membrane, Melting with cosmopolitanism, Reflecting the self-consciousness, Coming towards the origin; An individual, a political entity.

Ain't I speaking a new tongue, A new voice of amalgamation, completely unheard?



Neelkanth Pan is a student of M.A. English at Atma Ram Sanatan Dharma College

रब की मंज़िल

सोम्या पोहार

कैसे जी पाऊँगी अपनी ज़िंदगी बिना मक़सद जाने,
कैसे परखूँ उन रास्तों को जो हर बार मुझे बुलाएं,
सही-गलत का फ़ैसला तो वो रब ही करना जानें
कह गए वो बादशाह, हिम्मत तो दिखा
और कहते हैं लोग हिम्मत से पहले तू अपना पता तो बता,
बिना बताए रास्ते कैसे चली जाऊं
ज़िंदगी रब की है तो वही कर्म दिखाएं,
कहते हैं सब, हसीन है ज़िंदगी का सफ़र का सफ़र
यूँ मोड़ पर खड़ा रह इसे बर्बाद ना कर,
एक बार तक़दीर बदल के तो देख
तूफ़ैसला ले के तो देख,
वो आएगा रब ज़मीन पे जब
सुनेगा तेरी दलीलें अनेक,
इंतज़ार से तू ऐसे ख़ता ना कर
मिल जाएगी मंजिल ज़रा सब्र तो कर।



सोम्या पोद्दार शहीद भगत सिंह कॉलेज में अंग्रेज़ी ऑनर्स (द्वितीय वर्ष) की छात्रा हैं।

ठप्पा

00	
शितव	ज गुप्ता

ठप्पे-ठप्पे पर लिखा है पाने वाले का नाम । अब ठप्पा बताएगा कि आप कितने उपयोगी हैं । आज का युवा अपने अन्दर की प्रतिभा तलाशता हुआ नहीं, बल्कि गली कूचों में कोचिंग सेंटर तलाशता हुआ ज्यादा नज़र आता है; ताकि वह एंट्रेंस क्लियर कर सके । किसी और संस्था से उसे एक और ठप्पा मिल जाए और वो जरा ज़्यादा उपयोगी हो जाए । हम क्या कर सकते और क्या नहीं यह हम नहीं हम पर लगाए गये ठप्पे बताते हैं । जितने बड़े ठप्पे, उतना बड़ा इंसान ।

मशीन पर ठप्पा नया, बिंद्या, चमकदार और ऊँचे ब्रांड का होना चाहिए चाहे मशीन डब्बा ही क्यों न हो। कुछ यही हाल आज मानव का भी है। पहले तो लंबी-लंबी क़तारें लगती हैं- इसे पाने के लिए फिर इसकी नुमाइश होती हैं और अगर सब बिंद्या रहा तो ठप्पा आपको कोई न कोई पद दिला ही देगा। अगर आप नाकामयाब हो जाते हैं तो अपने भरोसे को ठप्पे पर बनाये रखें और फिर से निकल पड़ें- सभी पर चिपके एक जैसे ठप्पों से कुछ अलग व नए चमकदार ठप्पे की तलाश में। शायद अब आपका काम बन जाए और एक महत्वपूर्ण बात कि आप ये भूल जाएं कि आप दिल, दिमाग या कोई रचनात्मकता भी रखते हैं या काम और जीवन के प्रति आपके अपने कोई मूल्य व समर्पण भी हैं। बस याद रखिए कि आप एक पुतला हैं जो तभी उपयोगी और बिंद्या है, जब उस पर बिंद्या ठप्पे हों वरना वो किसी काम का नहीं।

आज का प्रत्यक्ष बेचारा कुछ नहीं, उसे भी अब प्रमाण की आवश्यकता होती है। तो फिर चिलए, चलते हैं! ठप्पे पाने की होड़ में कहीं देर न हो जाए। हो सकता है कोई ठप्पा आपको भी कामयाब बना दे। और हाँ खैर मनाएं कि अब तक मौत का कोई ठप्पा नहीं बना वरना हम सबके पास स्वर्ग का सर्टिफिकेट भी जरूर होता।



रितिका गुप्ता इन्द्रप्रस्थ कॉलेज फ़ॉर वीमेन में बीए ऑनर्स हिंदी, तृतीय वर्ष की छात्रा हैं।

The Demagogue's Mouthpiece

B # *	H .	0 01	
Ningo	lini	Sh	arma
IVIIIUU		-	IMITIM

Blessed are those whose songs are sung Their joys may be few but their worries are none The blanket doesn't let their feet get cold All altercations of the night by the morning are resolved The sun greets them with a warm embrace The kindred slumber ends in a glistening face For the water in the bath is always perfectly drawnThe bread from the toaster is gingerly brown Dodging raindrops in the rain Successfully in and then back out again They're crossing the seven seas, and You think it's all without a reason It might be because, their songs are sung F Blessed are those whose songs are sung. Their words may be strewn, the melody torn The harmony astray, the audience long gone But they're singing for you, and they're not yet done For blessed are those whose songs are sung



Ninadini Sharma is pursuing B.Sc. (Hons.) from Miranda House and is currently in her final year.

तू या मैं

विशेष चन्द्र 'नमन'

प्रण को कर के नमन कि अब तो जीतेगा मन तू बजा रणभेदी और हुंकार दे।

पथ में कांटे बहुत रखना इच्छा मजबूत तू ही जीतेगा युद्ध ये तू जान ले।

कर के बुद्धि प्रबल ढूंढ पथ तू सफल देख लक्ष्य है अटल ये तू भांप ले।

हो अधीर ना रे वीर मन को कर के स्थिर खींच संयम के तीर अब कमान से।

छुआ उसी ने शिखर जिसमें ओज हो प्रखर तू भी खोल अपने पर छू जहान को।



विशेष एसजीटीबी खालसा कॉलेज में गणित के विद्यार्थी हैं।

A Deafening Silence

	Muskan Dhandhi	
--	----------------	--

(The word 'Silence' in its true sense signifies peace, which could be derogatory as well as obnoxious and disturbing also. Somewhere, 'Silence' puts an individual into an alien environment where one is left with the job of introspecting one's own self. 'Silence' can create a fictitious identity of the victim and can force him/her to break away from the chains of society. Here, I will be analyzing a form of 'Silence' which tears one's soul apart leaving the victim completely shattered.)

Silence which is loud enough to damage my ear,
Silence which is cruel enough to bring someone near,
Silence which baffles my soul,
Silence which is as dark as coal,
Silence which is enough to make me insane,
Silence which is incessant as rain.
a deafening silence.....
a deafening silence.....

Silence which forces me to ask 'who am i?'
Silence which allows me to cry and sigh.
Silence which buries my soul,
Silence which craves to play an important role,
Silence which possibly wants me to die,
Silence which stops me from touching the sky.
a deafening silence.....
a deafening silence.....

Silence which fails to fade away with the passing of time,
Silence which is sour as the juice-filled lime
Silence which kills the innocent child within,
Silence which explores my dark side hidden.
Silence which leaves a trail of my evil past,
Silence which puts me in an alien cast.
a deafening silence.....
a deafening silence.....



Sanjhee Gianchandani is a student of M.A (English) final Year IV Semester at Lady Shri Ram College For Women.

I Want to Name Myself...



I want to name myself...

A name that captures the essence of 'me'...

But then who knows the essence? Whoever has?

Yet I want to name myself... A gift of name from me, to me!

I want to be mononymous! Just a single name. No surname, no maiden name. No burden of caste, class. No burden of worldy nomenclatures.

I refuse to be named like the animal kingdom... with a species name and a type! I refuse to be labelled by ethnicity. I refuse to be categorized. I refuse to be caste in an easy mould. I refuse to be put in the piles of social identities. I refuse to be identified by birth. I refuse to be identified by association. I refuse to be identified by worldy categories. I refuse to be identified. I command to be recognized instead.

For I belong less to the social world, and more to the elements. Name me after the sun, name me after the wind. Name me after the moon, name me after the mist that surrounds the mountains. Name me after the waters, name me after the fires. For I was born out of these and not of your social menageries. I want to be reclaimed by the elements that make me and that you, oh so often, polish it with your pretensions. I want to belong again to the land of wind and nature and want to disassociate from the fields of norms, religions and the 'right' ways. I want to merge with the ether, the skies and the oceans...where I come from and belong... no longer do I wish to be contained in your shallow world.



Lubhawani Yadav is a student of M.A. (Political Science) final year, Sem IV at Hindu College.

अथाह समुद्र की लहर

गौरव कुमार

समुद्र की लहरों को गौर से देख रहा हूँ इन तेज़ लहरों से उठती आवाज़ें अपनी कहानी कहती हैं समुद्र से उमड़ते ही क्षण भर में सागर में समा जाती हैं मैं ढूंढ रहा हूँ- इन लहरों की कहानी।

मंद-मंद हवाओं की ठंढक तैरती हुई, हिचकोले खाती थपेड़े मारती किनारों पर चट्टानों से टकरा रही हैं लौट कर समुद्र में मिल जा रही हैं।

इन लहरों में पल-पल पहाड़ियां उभरती हैं मानो इन लहरों में तैर रही हों हिम-शिलाएँ, जो एक दूसरे से टकराती हैं और समुद्र में समा जाती हैं। मेरी आँखें ढूंढती हैं उन पहाड़ियों को जो सागर में-समा गयी, ना जाने वे कहाँ गयी ?

बरसात की बूँदें जब लहरों से मिलती हैं तो ख़ूबसूरत झिलमिलाहट होती है
मानो लाखों मोतियाँ एक साथ चमकती हैं
उनकी छनछनाहट पायल की आवाज़ जैसी है
कुछ ऐसी है समुद्र की कहानी, तूफ़ानी लहरें कभी नाव को उछालती, कभी गिराती हैं
दूर कहीं क्षितिज पर पर्वतों की श्रंखलाएं नज़र आ रही हैं
बादलों से घिरी वे भी बरसात में नहा रहीं हैं
अपनी दास्तान कुछ यूं सुना रही हैं।

ज़िंदगी तो बरसात में भीगती, लहरों में तैरना सिखाती है, ज़िंदगी तो बरसात में भीगती, लहरों में तैरना सिखाती है, अम्बर के बरसने पर खुले आसमान में झूमते तो कभी वृक्ष के नीचे छिप जाते लहरों की उफ़ान को देख रहा हूँ।

उनके किस्से याद आ रहे हैं मुझे-हम उस अनंत सागर की बूँदें हैं जो उनसे उमड़ी, उनमें ही समाती हैं।

मेरी आँखें देख रही हैं इन लहरों को कुछ इस तरह ये अपनी कहानी सुनाती हैं छम-छम बरसती बरसात में इन हवाओं की सनसनाहट लहरों की कहानी है।



गौरव कुमार हंसराज कॉलेज में बीएससी वनस्पति विज्ञान, तृतीय वर्ष के छात्र हैं।